❋ 22 जून 2014 (14-2-78) की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] समीप आत्मा की निशानी क्या होगी? जितनी जो समीप होगा उतना स्थिति में, कर्तव्य में, गुणों में बाप समान अर्थात् सदा सम्पन्न अर्थात् दाता होगा। जैसे बाप हर सेकण्ड और संकल्प में विश्व कल्याणकारी है वैसे बाप समान विश्व कल्याणकारी होगा। विश्व कल्याणकारी का हार संकल्प हर आत्मा के प्रति, प्रकृति के प्रति शुभ भावना वाला होगा। एक भी संकल्प शुभ भावना के सिवाए नहीं होगा।

2] जैसे भक्त लोग कीर्तन में वर्णन करते हैं– देखना अलौकिक, चलना अलौकिक..... हर कर्मेन्द्रिय की महिपा अपरमपार करते रहते हैं, ऐसे हर कर्म महान अर्थात् महिमा योग्य होता है। ऐसी आत्मा को कहा जाता है बाप समान समीप आत्मा। ऐसे विश्व कल्याणकारी आत्मा का हर सेकण्ड का सम्पर्क आत्मा को सर्व कामनाओं की प्राप्ति का अनुभव कराता है। कोई आत्मा को शक्ति का, कोई को शान्ति का, मुश्किल को सहज करने का, अधीन से अधिकारी बनने का, उदास से हर्षित होने का, इसी प्रकार विश्व कल्याणकारी महान् आत्मा का सम्पर्क सदा उमंग और उत्साह हर्षित होने का, इसी प्रकार विश्व कल्याणकारी महान् आत्मा का सम्पर्क सदा उमंग और उत्साह दिलाता है। परिवर्तन का अनुभव कराता है, छत्रछाया का अनुभव कराता है। ऐसे विश्व कल्याणकारी अर्थात् समीप आत्मा बनने वाले, ऐसे को ही लगन में मगन रहने वाली आत्मा कहा जाता है।

3] तीव्र पुरूषार्थी अर्थात् सोचा और किया। सोचने और करने में अन्तर नहीं। जैसे कई बातों में प्लैन बहुत बनाते हैं, प्रैक्टिकल में अन्तर हो जाता है, तो तीव्र पुरूषार्थी जो होगा वह जो प्लैन बनायेगा वही प्रैक्टिकल होगा।

4] नई बातों में घबराना होता है लेकिन नथिंगन्यु। ऐसा अनुभव करने वाले सदा कमल पुष्प के समान रहते हैं। जैसे पानी नीचे होता है, कमल ऊपर रहता है, इसी प्रकार परिस्थिति नीचे है, हम ऊपर हैं, नीचे की बाते नीचे। कभी कोई बात आवे तो सोचो बापदादा हमारे साथ है। आलमाइटी के आगे कितनी भी बड़ी परिस्थिति चींटी के समान है। कैसी भी परिस्थिति हो लेकिन जो बाप के बने हैं उनका बाप जिम्मेवार है। सोचो नहीं– कहाँ रहेंगे, कैसे रहेंगे, क्या खायेंगे। सच्चे दिल का साथी बाप है। जब तक बाप है तब तक भूखे नहीं रह सकते। जब भक्तों को अनेक प्रकार के अनुभव होते हैं, वह तो भिखारी हैं उनका पेट भी भर जाता है तो आप अधिकारी हैं, आप भूखे कैसे रह सकते ! इसलिए जरा भी घबराओ नहीं, क्या होगा? जो होगा वह अच्छा होगा।

5] सिर्फ छोटा सा पेपर होगा कि वहाँ तक निश्चय है? पेपर सारे जीवन का नहीं होता, एक या दो घण्टे का पेपर होता है। अगर बापदादा सदा साथ है, पेपर देने के टाइम पर एक बल एक भरोसा है तो बिल्कुल ऐसे पार हो जायेंगे जैसे कुछ था ही नहीं।

6] एक-एक रत्न वैल्युएबल है क्योंकि अगर वैल्युएबुल रत्न नहीं होते तो कोटो में कोई आप ही कैसे आते। जिसको दुनिया अपनाने के लिए तड़फ रही है, उसने मुझे अपना लिया। एक सेकेण्ड के दर्शन के लिए दुनिया तड़प रही है, आप तो बच्चे बन गये तो कितना नशा, कितनी खुशी होनी चाहिए, सदा मन खुशी में नाचता रहे।

7] बाप को जान लिया, पा लिया इससे बड़ा भाग्य तो कोई होता नहीं। घर बैठे बाप मिल गया। बाप ने ही आकर जगाया ना बच्चे उठो, देश कोई भी हो लेकिन स्थिति सदा बाप के साथ रहने की हो, चाहे देश से दूर है लेकिन बाप के साथ रहने वाले नजदीक से नजदीक है।

❋ योग-

1] बाप की याद ही झूला है, इस झूले में ही झूलते रहो, इससे नीचे नहीं आओ।

...2

❋ 22 जून 2014 (14-2-78) की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

[2]

❋ धारणा-

1] विश्व का मालिक बनने का अधिकार, विश्व कल्याणकारी बनने का आधार से होगा। अब हरेक अपने आपसे पूछो– अधिकारी बने हैं? राज्य-भाग्य के अधिकारी बने हैं? तख्तनशीन बनने के अधिकारी बने हैं या रॉयल फैमिली में आने के अधिकारी बने हैं ?

2] यह देखो कि हर समय हर परिस्थिति में अष्ट शक्तियां साथ-साथ इमर्ज रूप में होती है? अगर दो-चार शक्तियां हैं और एक भी शक्ति कम है तो अष्ट बादशाहियों में नहीं आ सकते। अष्ट शक्तियों की समानता हो और एक ही समय अष्ट ही शक्तियां इमर्ज चाहिए। ऐसे भी नहीं कि सहन शक्ति 100 परसेन्ट लेकिन निर्णय शक्ति 60 परसेन्ट या 50 परसेन्ट है। दोनों में समानता चाहिए अर्थात् परसेन्टेज फुल चाहिए, तब ही सम्पूर्ण राज गद्दी के अधिकारी होंगे। अब बताओ क्या बनेंगे? अष्ट लक्ष्मी-नारायण के राज्य या तख्त के अधिकारी होंगे?

❋ सेवा-

1] कुमारियां निर्बन्धन हैं किसलिए? सेवा के लिए। ड्रामा में यह भी एक लिफ्ट है। इस लिफ्ट का लाभ लेना चाहिए। जितना-जितना अपना समय ईश्वरीय सेवा में लगाती जायेंगी तो लौकिक सर्विस का भी सहयोग मिलेगा, बन्धन नहीं होगा। कुमारियां बाप को अति प्रिय हैं क्योंकि जैसे बाप निर्बन्धन है वैसे कुमारियां है। तो बाप समान हो गई ना।

2] इसलिए एक-एक को समझाना चाहिए कि मुझ एक को अनेकों को सन्देश माला तैयार करनी है। जो भी सम्पर्क में आये उन्हें बाप का परिचय देते चलो तो कोई न कोई निकल आयेगा। हिम्मत नहीं हारना कि कोई निकलता नहीं, निकलेंगे। कोई-कोई धरनी फल थोड़ा देरी से देती है कोई जल्दी से, इसलिए जहाँ भी ड्रामा अनुसार सेवा के निमित्त बने हो जरूर कोई रत्न है तभी निमित्त बने हो। लक्ष्य पावरफुल रखो कि अब हमें सेवा से सबूत देना ही है। तो मेहनत से सफलता हो ही जायेगी।

3] जो भी सेवा करते हो उसमें सर्व आत्माओं के सहयोगी की भावना हो, खुशी की भावना वा सद्भावना हो तो हर कार्य सहज सफल होगा। जैसे पहले जमाने में कोई कार्य करने जाते थे तो सारे परिवार की आशीर्वाद लेकर जाते थे। तो वर्तमान सेवाओं में यह एडीशन चाहिए। कोई भी कार्य शुरू करने के पहले सभी की शुभ भावनायें, शुभ कामनायें लो। सर्व की सन्तुष्टता का बल भरो तब शक्तिशाली फल निकलेगा।

4] जैसे बाप जी हाजिर कहते हैं वैसे आप भी सेवा में जी हाज़िर, जी हज़ूर करो तो पुण्य जमा हो जायेगा।